॥ अन्नपूर्णास्तोत्रम् ॥

श्लोक १

हे माता अन्नपूर्णेश्वरी! तुम सदा आनन्ददायिनी हो, मंगलमयी हो, अभयदायिनी हो,
सौन्दर्य का सागर हो, सम्पूर्ण अमंगलों को धोकर पावन कर देने वाली हो,
महेश्वर की प्रत्यक्ष शक्ति हो, हिमालय के वंश को पावन कर देने वाली हो।
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक २

हे माता अन्नपूर्णेश्वरी! तुम नानाविध रत्नों के चित्र-विचित्र भूषणों को धारण करने वाली हो,
सुनहरे वस्त्रों को धारण करने वाली हो, तुम्हारे वक्षस्थल पर मोतियों का हार शोभायमान है,
केसर और अगरु के लेपन से सुवासित देह होने के कारण तुम रुचिकर लग रही हो।
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक ३

हे माता अन्नपूर्णेश्वरी! तुम योग से उत्पन्न आनन्द को प्रदान करने वाली हो,
रिपुओं का संहार करने वाली हो, धर्म और अर्थ में निष्ठा उत्पन्न करने वाली हो,
चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि के समान दीप्तिमान स्वरूप वाली हो, त्रैलोक्य की रक्षा करने वाली हो,
सम्पूर्ण ऐश्वर्यों के द्वारा समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने वाली हो।
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक ४

हे माता अन्नपूर्णेश्वरी! तुम कैलास पर्वत की कन्दराओं में निवास करने वाली हो,
तुम गौरी, उमा, शंकर की प्राणवल्लभा होने के कारण शंकरी हो, कौमारी हो।
तुम वेदों के अर्थ प्रकट करने वाली हो, तुम बीजाक्षर ॐकार हो,
मोक्ष के कपाट खोल देने वाली हो।
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक ५

हे माता अन्नपूर्णेश्वरी! तुम दृश्य तथा अदृश्य, प्रचुर सम्पदाओं को धारण करने वाली हो,
ब्रह्माण्डरूपी भाँड [बर्तन] को अपने गर्भ में धारण करने वाली हो,
लीलारूपी नाटक के सूत्र का भेदन करने वाली हो [अर्थात् मोक्षप्रदायिनी हो],
ज्ञान-विज्ञानरूपी प्रकाश को प्रदीप्त कर देने वाली हो,
श्रीविश्वेश्वर भगवान शंकर के चित्त को प्रसन्न कर देने वाली हो।
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक ६

तुम पृथ्वी के समान विशाल हो, समस्त प्राणियों की अधिष्ठात्री देवी भगवती हो,
तुम अन्नपूर्णेश्वरी माता हो, वेणी के नीलरत्न के समान घुँघराली केश-रचना से परिपूर्ण हो,
नित्य अन्नदान करने वाली महेश्वरी हो, सम्पूर्ण मानवता को आनन्द प्रदान करने वाली हो,
दुःस्थिति को शुभस्थिति में बदल देने वाली हो।
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक ७

हे माता अन्नपूर्णेश्वरी! तुम अकार से क्षकार पर्यन्त, समस्त वर्णों की रचना करने वाली हो,
भगवान शिव के तीनों भावों का कारण स्वरूप हो, तुम्हारी देह का वर्ण केसर के समान है,
तुम तीनों लोकों की स्वामिनी हो, तीन लहरों के रूप में तीनों तत्त्वों से विभूषित हो,
समस्त संसार की नित्य सृष्टि करने वाली हो,
तुम कालरात्रि [संसार का विलय करने वाली] हो, कामनाओं और आकांक्षाओं
की पूर्ति करने वाली हो, प्राणियों का अभ्युदय करने वाली हो।
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक ८

हे माता अन्नपूर्णेश्वरी! तुम कान्तिमयी देवी हो, सम्पूर्ण चित्र-विचित्र रत्नों को धारण करने वाली हो,
दक्षकन्या, दाक्षायणी हो, अभिराम अंगो से युक्त सुन्दरी हो, तुम वामा हो
[अर्थात् तुम्हारे अंग-प्रत्यंगों से आभा छिटक रही है] अथवा अर्द्धनारीश्वर मूर्ति का वाम भाग हो,
उस वाम भाग में सुस्वादु पयोधर धारण करने के कारण मनोरम लग रही हो,
सौभाग्य प्रदान करने वाली महेश्वरी हो, भक्तों की अभीष्ट इच्छाओं की पूर्ति कर देने वाली हो,
तुम दुःस्थिति को शुभस्थिति में बदल देने वाली हो।
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक ९

हे माता अन्नपूर्णेश्वरी! तुम कोटि-कोटि चन्द्रमा, सूर्य और अग्नियों के समान आभा वाली हो,
चन्द्र की किरणों के समान चमकीले और बिम्बफल के समान गुलाबी अधरों [होंठों] वाली हो,
चन्द्रमा और अग्नि के समान प्रभा वाली केशराशि धारण करने वाली हो,
चन्द्रमा और सूर्य के समान वर्ण की अधीश्वरी हो,
तुम अपने हाथों में माला, पुस्तक, पाश और अंकुश धारण करने वाली हो,
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक १०

हे माता अन्नपूर्णेश्वरी! तुम क्षत्रियों को त्राण प्रदान करने वाली हो,
महाअभय प्रदान करने वाली हो, तुम कृपा के सागर से परिपूर्ण माता हो,
साक्षात् मोक्षप्रदायिनी हो, सदा मंगलदायिनी हो, भगवान विश्वेश्वर की शोभाधारिणी हो,
प्रजापति दक्ष का गर्व चूर कर देने वाली हो, आरोग्यदायिनी हो।
काशीपुरी की अधिष्ठात्री देवी, मुझ पर कृपाकर अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक ११

हे माता अन्नपूर्णा! हे सदा परिपूर्ण रहने वाली! हे भगवान शंकर की प्राणवल्लभा!
ज्ञान तथा वैराग्य की सिद्धि के लिए हे पार्वती! तुम मुझे अपने आशीषों की भिक्षा प्रदान करो।

श्लोक १२

मेरी माता पार्वती देवी हैं और पिता भगवान महेश्वर हैं।
उनके सम्पूर्ण भक्तजन मेरे बन्धु-बान्धव हैं और तीनों लोक मेरे देश हैं।

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।